

आत्ममोह पुं. (तत्.) [आत्म+मोह] 1. अपने ऊपर मोह, अपने रूप-रंग, आदि का मोह 2. आत्म भ्रम।

आत्मयोनि पुं. (तत्.) स्वयं ही जन्म लेने वाला, स्वयंभू, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, कामदेव।

आत्मरक्षक वि. (तत्.) [आत्म+रक्षक] स्वयं अपनी रक्षा करने वाला।

आत्मरक्षण पुं. (तत्.) [आत्म+रक्षण] अपनी रक्षा, अपना बचाव, अपनी हिफाजत।

आत्मरक्षा स्त्री. (तत्.) अपना बचाव, अपनी रक्षा।

आत्मरत वि. (तत्.) 1. ब्रह्मज्ञान की साधना में रत, ब्रह्मज्ञानी 2. स्वयं से प्रेम करने वाला।

आत्मरति स्त्री. (तत्.) दर्श. आत्मा के आनंद में निमग्न होना, आत्मिक आनंद का निरंतर अनुभव मनो. अपने शारीरिक गुणों विशेषतः रूप पर अतिरंजित आत्ममुग्धता।

आत्मलीन वि. (तत्.) [आत्म+लीन] अपने ही कार्य में डूबा रहने वाला व्यक्ति, दूसरों की तरफ ध्यान न देने वाला।

आत्मवंचक पुं. (तत्.) [आत्म+वंचक] अपने आप को धोखा देने वाला, हवाई बातों के चक्कर में रहने वाला।

आत्मवत्ता स्त्री. (तत्.) 1. आत्मनियंत्रण, आत्मसंयम 2. समझ, चेतना 3. धीरता 4. बुद्धि।

आत्मवाद पुं. (तत्.) आत्मा के अस्तित्व का प्रतिपादन करने वाली चिंतनधारा।

आत्मवादी पुं. (तत्.) [आत्म+वादी] आत्मा को सर्वत्र व्याप्त समझने वाला, आत्मवाद पर आस्था रखने वाला।

आत्मविक्रय पुं. (तत्.) [आत्म+विक्रय] 1. अपने आप को बेचने का भाव। 2. ऋण वापस न करने की अवस्था में, ऋण देने वाले का सेवक अथवा अनुयायी बनने का भाव।

आत्मविघटन पुं. (तत्.) [आत्म+विघटन] 1. आत्म निरीक्षण की प्रक्रिया में, व्यक्ति की

अहंता के दो अंशों की पारस्परिक टक्कर। 2. अनिर्णय की स्थिति में उत्पन्न विक्षोभ।

आत्मविचार पुं. (तत्.) [आत्म+विचार] 1. आत्मतत्त्व का चिंतन 2. परमात्मा का चिन्तन।

आत्मविज्ञापन पुं. (तत्.) [आत्म+विज्ञापन] 1. अपने आप अपनी तारीफ, आत्म प्रशंसा, अपने मुँह मियाँ मिट्टू।

आत्मविद् पुं. (तत्.) 1. आत्मज्ञानी 2. ब्रह्मज्ञानी।

आत्मविद्या स्त्री. (तत्.) ब्रह्मविद्या 2. अध्यात्म विद्या।

आत्मविभेदन पुं. (तत्.) [आत्म+विभेदन] समाज. ऐसी प्रवृत्ति वाला व्यक्ति जो अपने आप को अपने समूह से थोड़ा उच्च समझता हो।

आत्मविभोर वि. (तत्.) हर्षातिरेक से अभिभूत, सुध-बुध भूला हुआ, अपने ही विचारों में खोया हुआ।

आत्मविरेचन पुं. (तत्.) [आत्म+विरेचन] मनो. एक प्रकार की मनः चिकित्सा, जिसमें व्यक्ति अपने विक्षोभ आदि, मुक्त कंठ से अभिव्यक्त करता है, और रोग मुक्त हो जाता है।

आत्मविश्लेषण पुं. (तत्.) [आत्म+विश्लेषण] अपने स्वभाव को स्वयं समझने की क्रिया, अर्थात् अपना व्यवहार, अपनी भाषा, मनोविकार आदि समझने की क्रिया।

आत्मविश्वास पुं. (तत्.) 1. अपने आप पर विश्वास 2. अपनी शक्ति या योग्यता पर विश्वास, स्वयं की शक्ति, बुद्धि का भरोसा।

आत्मविश्वासी पुं. (तत्.) [आत्म+विश्वास] अपनी बुद्धि और अपने बल पर दृढ़ विश्वास वाला, आत्मविश्वास वाला।

आत्मविषाक्तता स्त्री. (तत्.) [आत्म+विषाक्तता] चिकि. शरीर में, जैविक क्रियाओं द्वारा, अंदर ही अंदर, अंगों अथवा रक्त का विषाक्त हो जाना।

आत्मविस्मृत स्त्री. (तत्.) अपने आप को भूला हुआ, अपने अस्तित्व को भूला हुआ, स्वयं की शक्ति को न पहचान पाने वाला।